मजदूर वर्ग के लोक प्रिय एवं देश की
जनता के एक साहसी नेता कामरेड
योगेश (कुप्पूस्वामी देवराज) को
लाल–लाल जोहार!

केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
जनवरी –2020

मजदूर वर्ग के लोक प्रिय एवं देश की जनता के एक साहसी नेता कामरेड योगेश (कुप्पूस्वामी देवराज) को लाल–लाल जोहार!

राज्य सत्ता के दमनकारी यंत्र जैसे केरल की थंडरबोल्ट और तमिलनाडु की एसटीएफ ने अपनी खून की प्यास को 24 नवंबर 2016 को केरल के पश्चिम घाटी की करूलाई जंगलों में हमारे लोकप्रिय नेता और केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड कुप्पूस्वामी देवराज और पष्ठिचमघाटी स्पेष्ठाल जोनल कमेटी सदस्य कामरेड़ अजिता को गोली मार कर बुझा दी। इन ष्ठाहीदों की आदर्ष्ठामय जीवनीयां नया पीड़ियों के लिए हमेष्ठा प्रेरित करेंगे।

कामरेड देवराज का शुरूआती दौरः

गरीब और शोषित, दलित परिवार में जन्मे, कामरेड देवराज तमिलनाडु के कृष्णागीरी जिला के सेत्तीपाटी गांव में दुराईस्वामी और अम्मिन्नी का सबसे बड़ा बेटा था। माता-पिता काम के खोज में तमिलनाडु से बेंगलुरू आये। छोटे आयू में पिता की मौत ने परिवार के दरोमदार का बोझ नन्हें देवराज के कंधों पर आ पड़ा। आईटीआई का कोर्स पूरा करने के बाद बंगलोर के एल एंड टी कम्पनी में टेक्निकल मजदूर की नौकरी की। उसके परिवार में बीवी बच्चों समेत उसके भाई और बहन भी थे। नौकरी के दौरान फेक्टरी के दमनकारी मेनेजमेंट के खिलाफ मजदूरों को संगठित किया। सच कहे तो पार्टी के संपर्क में आने के पहले से ही एक क्रांतिकारी विचारों के आधार, पर कई अन्य साथियों की तरह वे मजदूरों को संगठित कर रहे थे। वहीं से सर्वहारा क्रांति की, एक क्रांतिकारी पार्टी की और मजदूर-किसानों के सेना की आवश्यकता को समझ लिए थे।

कर्नाटक में क्रांतिकारी जीवन की शुरूआतः

1960 के नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान आंदोलन से प्रेरणा लेकर कर्नाटक के बुद्धिजीवी और किसानों ने जनता के बीच काम करना शुरू कर दिया। उन्हीं में से एक थे सिराय्यी गांव के कोंगानुरू गोणप्पा। उन्होंने नक्सलबाड़ी आंदोलन की रणनीति पर जनता को जगाना शुरू कर दिया। जमींदारों के गुंडों ने उनकी हत्या कर दी। उसके बाद दस साल का अंतर रहा। 1980 में सीपीआई (एमएल) (पीपुल्सवार) की स्थापना हुई। देशभर के क्रांतिकारी कार्यकर्ता और व्यक्ति संगठित होना शुरू हो गये। कामरेड आजाद को पार्टी ने कर्नाटक में

संगठक के रूप में भेजा था। पीपुल्सवार तब आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में कार्यरत थी और उसकी क्रांतिकारी राजनीति से प्रेरित कामरेड देवराज 1980 में संपर्क में आये। अल्पसमय में ही उन्होंने कई मार्क्सवादी सिद्धांत किताबें पढ़े। उन्होंने मेहनतकश जनता के लिए लड़ने वाली क्रांतिकारी पार्टी की जरूरत को समझ लिया था। कर्नाटक के भूमि में पीपुल्सवार पार्टी के क्रांतिकारी राजनीति के बीज बोने में एक रहा। तुरंत वे कार्यकर्ता बने और उनका घर पार्टी कामकाज का केन्द्र बना। परिणामत: पार्टटाइमर कार्यकर्ता कर्नाटक में विकसित हुए और उन्हें पार्टी सेल में संगठित किया गया। देवराज वैसे ही एक सेल के सक्रिय सदस्य थे। मजदूर, छात्र और युवको के बीच अन्य साथियों के साथ मिलकर राजनीतिक और संगठनात्मक काम शुरू कर दिया। 1980-85 के दौरान कर्नाटक में पार्टी सेल काफी सक्रिय हुए। तब कर्नाटक में नेतृत्व कमेटी नहीं थी। दरअसल कोई फुल टाइमर भी नहीं था। सभी पार्ट टाईमर थे। परिस्थिति की (नजाकत) को देखकर कामरेड चुरूकुरी राजकुमार (आजाद) के नेतृत्व में वे तुरंत पीआर बन गये। 1985 तक 8 कार्यकर्ता पीआर बन गये जिनमें देवराज आगे थे। बंगलोर, कोलार और मैसुर में ये सारे पीआर (मजदूर, युवा और विद्यार्थी में) काम कर रहे थे और उनके कई संघर्ष भी उठाये। एक सांस्कृति संगठन भी खड़ा किये। दरअसल का. देवराज शुरूआती दौर में सांस्कृतिक कार्यकर्ता थे और अखिल भारतीय क्रांतिकारी संस्कृति समीति (एआईएलआरसी) में कार्यकारीणी में सदस्य के रूप में काम करते हुए एक महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरा । वे अच्छे गायक थे, और कर्नाटक, तमिलनाडु में कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेता था। सांस्कृतिक सगठन, पार्टी और जनसंगठन के कार्यकर्ता थे। और दीर्घकालीन जनयुद्ध, आंध्रा, बिहार के आंदोलन के बारे में प्रचार कर रहे थे। ये प्रचार और व्यापक स्तर में ले जाया गया। इसी प्रक्रिया में 1985 तक सैद्धांतिक और रणनीतिक एकता पर आधारित होकर कामरेड आजाद के नेतृत्व में एक नेतृत्व टीम का गठन किया गया। का. देवराज इस टीम के प्रमुख सदस्य थे।

इस प्रकार, नेतृत्व टीम के अगुवाई से पूरे कर्नाटक में हमारी पार्टी और क्रांतिकारी रणनीति की पहचान बन गई। 1987 में पहली राज्य अधिवेशन में कामरेड आजाद राज्य कमेटी के सचिव चुने गये। कामरेड कुप्पूस्वामी देवराज और साकेत राजन भी इस कमेटी में चुने गये। इस अधिवेशन में सशस्त्र खेतीहर

क्रांति का परिप्रेक्ष्य (परस्पेक्टिव) अपनाया। राज्य के असमान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर आंध्र से सटे, उत्तर कर्नाटक के मैदानी इलाके में आंदोलन की शुरूआत करने का फैसला किया। राज्य कमेटी के सदस्य होने के नाते ग्रामीण आंदोलन का कार्यभार संभालकर सीधे नेतृत्व के देखरेख में ही आंदोलन प्रगति कर सकता है ये बात वे खूब समझे थे। ये संघर्ष तकरीबन दो साल चला। कई विद्यार्थी इस प्रदेश में काफी सक्रिय हुए।

बिदर और रायचुर जिले में किसानों के बीच उन्होंने काम किया। किसानों को एकट्ठा कर एक किसान आंदोलन खड़ा कर सामंत-विरोधी राज्य-विरोधी आंदोलन किया। इसी दौरान कैगा न्युक्लियर प्लांट का संघर्ष उभर के आया। विद्यार्थी क्षेत्र में काम का विस्तार कर बिदर, रायचुर, शिमोगा, चित्रदुर्गा और ध ारवाड़ जिले में विद्यार्थी संगठन गठित किया। कैगा का आंदोलन और विद्यार्थी संगठन के काम से दोनों को मिलाकर पार्टी के काम को राज्य भर में सराहना की। 1990 में पार्टी का दूसरा राज्य अधिवेशन संपन्न हुआ, जिसमें आंदोलन की समीक्षा की गई। इस अधिवेशन में सामंत-विरोधी संघर्ष में मुख्यत: लड़ाकूपन से संबंधित कुछ खामियां नजर आई। इस अनुभव से सबक सीखते हुए, पार्टी को सुदृढ़ बनाकर सीधे नेतृत्व देते हुए संघर्ष को आगे बढ़ाने का निर्णय हुआ। गैर-सर्वहारा प्रवृत्तियों को सुधारने के उद्देश्य से 1993 में राज्य प्लीनाम हुई। जनता के समस्याओं को हल करने, पार्टी को विकसित कर आंदोलन को आगे बढ़ाने का फैसला किया गया। नवंबर 1995 के अखिल भारतीय स्पेष्ठाल कन्फ्रेन्स सम्पन्न हुई। इस विष्ठेष्ठा अधिवेशन पहले राज्य के तीसरी अधिवेशन सम्पन्न हुई। जिसमें कामरेड देवराज को राज्य कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गयी। अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में कामरेड़ कुप्पोस्वामी देवराज को वैकल्पिक सीसी सदस्य बनाया गया।

1997 में उन्हें पूर्ण सीसी सदस्य के रूप में चुन लिया गया। इसी दौरान कर्नाटक पार्टी में अंतर्गत संघर्ष शुरू हुआ और आंदोलन का विकास थमने लगा। भूतपूर्व पीपुल्सवार पार्टी के 2001 के 9वीं कांग्रेस में कामरेड देवराज को दोबारा सीसी में चुना गया। सीसी ने साउथ वेस्ट रीजिनल ब्यूरो का गठन किया और कामरेड देवराज इसका सदस्य बने। इसी बीच राज्य कमेटी ने परिप्रेक्ष्य क्षेत्र बदलने का प्रस्ताव सीसी के सामने रखा। सीसी ने इस प्रस्ताव को मंजूर कर

एक विस्तृत योजना बनाई। राज्य कमेटी ने मलनाड़ क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थिति का अध्ययन किया। 21वीं सदी की शुरूआत में कामरेड साकेत राजन के साथ मिलकर मलनाड़ में आंदोलन को प्रारंभ करने में कामरेड देवराज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। 2004 में सीपीआई (माओवादी) का गठन हुआ। नये पार्टी के गठन में कामरेड देवराज का सीसी सदस्य के रूप में योगदान रहा। वे पुनः एसडब्ल्यूआरबी के और सीसी के सदस्य बने।

2007 के 9वीं कांग्रेस एकता कांग्रेस में शामिल होकर सैद्धांतिक, राजनीतिक योगदान दिया। उसी वर्ष आखिर और अगले वर्ष के अंदर सभी आरबी सदस्य या तो पकड़े गये या शहीद हुए। कामरेड देवराज ने तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल ये तीन राज्यों की जिम्मेदारी उठायी।

2002 में उत्तंगराई घटना में तमिलनाडु राज्य कमेटी सचिव समेत अधिकांश तमिलनाडु राज्य कमेटी सदस्य गिरफ्तार हुए। इस अवस्था में अन्य राज्य कमेटी सदस्य, सचिव पद का भार उठाने के लिए कोई तैयार नहीं थे और ये जिम्मेदारी भी कामरेड देवराज पर आयी। गिरफ्तार किये गये साथियों में एक गुट सचिव दुराईसिंगवेल के नेतृत्व में सशस्त्र आंदोलन को स्थगीत करने के उद्देश्य से और पार्टी को तोड़ने के उद्देश्य से वर्ग विश्लेषण के नाम पर एक वैकल्पिक दिशा का प्रस्ताव रखा। उन्होंने तो विघटनकारी राजनीति अपनायी और पार्टी को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की। कामरेड देवराज ने प्रमुख भूमिका निभाते हुए राजनीतिक रूप से संघर्ष कर दक्षिणपंथी अवसरवादी दिशा को परास्त कर पार्टी को विघटन से बचाया। जब तमिलनाडु में कोई भी पार्टी सशस्त्र संग्राम खड़ा करने को तैयार नहीं थे तब कामरेड देवराज की अगुवाई और प्रबल नेतृत्व के नीच पश्चिम घाटी में तीन दलों के सहारे शुरू कर दिखाया। इनमें से वरूसानाड़ दल को दुश्मन ने घेर कर हमला किया जिन में कई लोग घायल हुए। 2008 नवंबर में कोडाईकेनल दल पर हमला हुआ और इसमें अभिशेक और मनोहर शहीद हो गये।

जब एसडब्ल्यूआरबी ने नेतृत्व प्रशिक्षण परियोजना (एलटीपी) लिया तब कामरेड देवराज ने जिम्मेदारी उठाकर तीनों राज्यों में प्रशिक्षण कैम्प लिए। ये राज्यस्तर से लेकर सभी स्तरों के साथियों के लिए था। इस योजना के चलते सभी कैडरों को आंदोलन के अनेक पहलूओं के बारे में एक स्पष्ट परिप्रेक्ष्य विकसित करने में और विस्तृत अध्ययन में लाभदायक साबित हुआ। ये पार्टी को

राजनीतिक तौर पर सशक्त करने में उनका बड़ा योगदान साबित हुआ।

सैद्धांतिक संघर्ष:

1985 के सीसी के संकट काल के दौरान कर्नाटक के नेतृत्व टीम ने सीसी के अंदर विघटनकारी और अवसरवादी गुट के खिलाफ एक सक्रिय भूमिका निभायी। इस आंतरिक संघर्ष में कामरेड आजाद के नेतृत्व में कामरेड देवराज और कामरेड साकेत राजन ने प्रमुख भूमिका निभायी। तब उन्हें वर्ग संघर्ष का इतना तजुर्बा नहीं था फिर भी उनका मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवादी और पार्टी बुनियादी दस्तावेज, भारत के व दुनिया के क्रांतिकारी इतिहास अध्ययन गहरा था और सैद्धांतिक, राजनीतिक पकड़ अच्छा खासी थी। वे दृढ़ता से पार्टी के दीर्घकालीन जनयुद्ध की दिशा का पालन किया और पार्टी को सशस्त्र संग्राम में टिके रहन में मदद की। उनका अध्ययन और सैद्धांतिक संघर्ष जो उस गुट के खिलाफ चलाया था। वही भविष्य में राज्य के पार्टी संगठन का आधार बना। इससे उस टीम को बाद में राज्य कमेटी के रूप से विकसित होने में मदद भी मिला। आंध्रा राज्य कमेटी पर जब तीव्र दमन का सामना हुआ तब भी इस टीम ने उनकी सहायता की। इस टीम की मदद से ही कुछ विशिष्ट कामों को सफलतापूवर्क आंध्रा कमेटी ने संपन्न किया और परस्पर लाभदायक साबित हुआ। इन दोंनों आंदोलन के बीच में अच्छे समन्वय विकसित हुए।

सीसी का कामकाज 1985-87 के संकट काल के दौरान कुछ समय के लिए टीम टप्प हो गया था। विभिन्न राज्यों के आंदोलनों को समन्वय करने और उन्हें मार्गदर्शन देने के लिए कोई केंद्र नहीं था। इस दौरान कामरेड आजाद, कामरेड कुप्पोस्वामी देवराज और कामरेड साकेत राजन ने ही मिलकर कैडरों को टिकाये रखने में मेहनत की। तमिलनाडु के कैडरों को भी टिकाये रखने में कामरेड देवराज की बेहद मुख्य भूमिका रही।

1991 में अखिल भारतीय स्तर पर पार्टी को दोबारा संकट का सामना करना पड़ा। इस वक्त कर्नाटक राज्य कमेटी ने दस्तावेज लिखकर अल्पसंख्याक गुट के गलत प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया। 1992 में इस अवसरवादी गुट के खिलाफ संघर्ष में उतरने का आह्वान सभी कैडरों को किया। इस विघटनवादी गुट के बारे में समझने और इसके खिलाफ सैद्धांतिक लड़ाई तीव्र करने के दृष्टि से ये आह्वान किया था।

जैसे ही कर्नाटक के परस्पेक्टिव इलाका में काम शुरू हुआ अवसरवादियों

ने किचड़ उछालना शुरू किया, ये कह कर ये टिकने वाला नहीं है। वे एमसीसी के साथ विलय और माओवादी पार्टी के गठन के भी खिलाफ थे। ऐसे समय में दुश्मन से लड़ते कामरेड साकेत राजन शहीद हुए। उनकी शहादत के बाद कामरेड देवराज ने दक्षिणपंथी अवसरवादी गुट की लड़ाई सीसी और एसडब्ल्यूआरबी के मदद से जारी रखी।

बहुसंख्याक साथी पार्टी के साथ रहे। आखिरकर 2006 के राज्य अधिवेशन में ये मामला सुलझा और अवसरवादी गुट पार्टी छोड़ चले गये। कामरेड देवराज के नेतृत्व में एक दस्तावेज लिखा गया - ''क्रांतिकारी द्वंद्ववाद को अवसरवादी कभी नहीं समझ पायेंगे''। उसी समय (2006) तमिलनाडु के मदुराई और आसपास के जिलों में सशस्त्र गुरिल्ला दल फिर शुरू हुआ। इस परस्पेक्टिव क्षेत्र को और कैडरों को सशस्त्र संघर्ष के लिए तैयार करने में कामरेड देवराज ने मुख्य जिम्मेदारी संभाली।

तमिलनाडु में जब एक राष्ट्रवादी संगठन ने माओवादी पार्टी की स्थापना के खिलाफ एक लेख लिखा था, तब कामरेड़ योगेष्ठा ने ''पोराली'' पत्रिका के जरिये करारा जवाब दिये। इस जवाब के जरिये राष्ट्रीयता के प्रश्न पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण और बुर्जुवा राष्ट्रवाद का अंतर स्पष्ट किया। सीपीआई (एमएल) राज्य संगठक कमेटी (सीपीआई (एमएल)एसओसी) नक्सलबाड़ी के राजनीति के समर्थन के नाम पर, हकीकत में नक्सलबाड़ी के मूलभूत दिशा का विरोध करते हुए एक दक्षिणपंथी अलगाववादी दिशा को पेश कर रहे थे। एक तरफ पीपुल्सवार और एमसीसीआई को समर्थन दिखाते (जिसके जरिए वे क्रांतिकारी भाईचारा संगठन होने का ढोंग करती हैं) तो दूसरी तरफ जब मौका मिले तब हमारे क्रांतिकारी दिशा पर हमला बोल देती थी। हमारी पार्टी का अध:पतन हुआ है ये दिखाने के लिए झूठ और मिथ्य फैलाती थी। कामरेड रविंद्र के शहादत के बाद भी ऐसा ही लिखा था। उसका मुहतोड़ जवाब 'पोराली' पत्रिका में हमने दिया। उसके जवाब में उन्होंने ने एक पुस्तिका छपाई। उत्तंगराई घटना के बाद निर्माण हुई परिस्थिति और फलत: नुकसान जो पार्टी को उठाना पड़ा, इसका फायदा उठाकर हमारी पार्टी की क्रांतिकारी दिशा पर तीखा हमला किया। हमारे पार्टी पर और दिशा पर अविश्वास निर्माण करने के दृष्टि से ही इस पुस्तिका का प्रकाशन किया गया था। अप्रत्यक्ष रूप से हमारी पार्टी को साफ करने के शत्रु के प्रयास को ही ये मद्दगार साबित हुआ। इसके अलावा कथित तौर पर

आंतरिक प्रसारण के नाम पर एक परिपत्र निकाला जिसमें हमारे पार्टी के बदनामी हेतु झूठ और कलंक लगाने वाले गढ़ी बातों का संकलन था। इसके तुरंत बाद राज्य कमेटी में एसओसी के हानिकारी हमले की चर्चा हुई। अपनी दिशा पर गहराई से पकड़ बनाने की जरूरत को समझते हुए एसओसी के खिलाफ जरूरी राजनीतिक संघर्ष चलाने का निर्णय लिया गया। दक्षिणपंथी अवसरवाद अत: एसओसीके खिलाफ एक अटल संघर्ष करने निर्णय राज्य कमेटी लिया। 'पोराली' पत्रिका में तीन लेख, उनकी राजनीतिक और सैनिक दिशा का पर्दाफाश करते हुए एक पुस्तिका और तथा कथित आंतरिक परीपत्र के अंतरवस्तु का पर्दाफाश करते हुए एक खुला पत्र निकाला गया। इससे एसओसी के निहीत अवसरवाद को सरेआम नंगा कर दिया। इससे हमारे पार्टी की समझ को और गहराई से समझ बढ़ाने में कैडरों को बहुत लाभ हुआ। तमिलनाडु के तमाम एमएल पार्टियों के, जनवादी शक्तियों के और राष्ट्रीयतावादी ताकतों के सामने एसओसी की विध्वंसकारक प्रयासों को खुला कर परास्त कर दिया। इससे अपनी दिशा पर अपने साथियों का हौसला अधिक बुलंद हुआ। कई नये साथियों को अपनी ओर लाने में ये संघर्ष काफी मद्दगार रहा। एसओसी के अंतर्गत ही उनके दक्षिणपंथी अवसरवादी और कानूनबद्ध (लीगल) व्यवहार पर सवाल उठाये गये। ये संघर्ष तमिलनाडु में क्रांतिकारी राजनीति की ओर ध्रुवीकरण करने में अपनी भूमिका निभायी।

पश्चिम घाटी के ट्राइ-जंक्शन की ओर आमाद-रफ्त:

2011 के बाद दक्षिण क्षेत्र पार्टी के सारे साथियों को ट्राइ-जंक्शन क्षेत्र में केन्द्रित कर तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल के सीमावर्ती जंगलों में काम करने का फैसला लिया गया। एक नये युद्ध क्षेत्र शुरू करने कामरेड देवराज सदा उत्सुक रहते थे। कामरेड़ देवराज कैडर और जनता में रामेष्ठा और योगेष्ठा,मंजू के नाम से लोकप्रिय थे। वे लगातार ये तीनों राज्यों की परिस्थिति का अध्ययन करते थे। इस तरह, उन्होंने ट्राइ-जंक्शन में काम शुरू करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। और एक बार ट्राइ-जंक्शन की ओर विस्तार के लिए कैडरों को नेतृत्व दिए। चिरकालिक बीमारी और बढ़ती उम्र ने कामरेड कुप्पूस्वामी देवराज के जोश को कभी कम नहीं कर पायी। 64 साल की उम्र में, पश्चिम घाटी के ऊंची-ऊंची पहाड़ी या घने जंगल, लगातार बारिश में ब्लेड प्रेशेर और डायाबिटिस की बीमारी होते हुए भी वे पीएलजीए के दलों के साथ चल पढ़े। मलनाड़ और

ट्राइ-जंक्शन को जोड़ने वाली पहाड़ियों को पार करने के लिए तीन बड़ी नदियां, ऊंचे घने घाटियां और लगातार शत्रु के हमलों के बीच तीन महीनों का लंबा सफर तय किया। थोड़े ही समय में स्थानीय आदिवासियों के बीच पार्टी काफी प्रचालित हुई। पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए ने सफल तरीके से राजनीतिक-सैनिक अभियान को अंजाम दिया। जनता के बीच दलों का गहराई से संबंध बना। तीनों राज्य के सरकार चौकन्ना हो गये। ट्राइ-जंक्शन के आंदोलन की प्रगति संशोध नवादियों पर करारा तमाचा सा रहा, खासकर केरल में कामरेड देवराज के गतिशील योगदान के साथ पार्टी जनता को सही राह दिखाने में सक्षम रही।

कामरेड देवराज का अन्य क्रांतिकारी कम्युनिस्टों को संगठित करने में भी योगदान रहा है। सीसी के ओर से सीपीआई (एमएल) नक्सलबाड़ी गुट के साथ बातचीत की जिम्मेदारी ले ली, जिसके चलते दोनों पार्टियों का विलय हुआ। इससे पहले भी जनशक्ति पार्टी के कुछ लोगों के साथ बातचीत कर उनमें से एक घटक को पार्टी में लाने में सफल हुए। तमिलनाडु में भी एक छोटे गुट के साथ चर्चा चला कर उन्हें पार्टी में शामिल किया। पार्टी के पत्रिका हो या जन संगठन के, उसे नियमित रूप से चलाने में उनका योगदान रहा है। संबंधित कमेटियों के जरूरतों के अनुसार दस्तावेजीकरण करने में गंभीरता से कार्यरत हो जाते थे। एक महत्वपूर्ण पहलू रहा कामरेड देवराज का, वो है शस्त्र और गोलाबरूद सप्लाइ-कई सालों तक ये काम निरंतर किया। एक ग्रेनेड उत्पादन का कारखाना खड़ा करने में भी काफी सफल रहे।

80 के दशक में, सिंहाला वंशवाद और फासीवादी दमन के खिलाफ श्रीलंका के तमिल जनता ने अलग तमिल इलाका 'तमिल ईलम' के लिए सशस्त्र संघर्ष शुरू हुआ। हमारी पार्टी ने तमिल जनता के मुक्ति संघर्ष का पूरा समर्थन किया। सिर्फ अलग तमिल ईलम की मांग का समर्थन मात्र नहीं बल्कि कई भाईचारा अभियान चलाये। इस अभियान में कामरेड देवराज ने मुख्य भूमिका निभायी।

कामरेड देवराज एक दबे हुए दलित समाज से आये हैं। वे अंग्रेजी, मलयालम, तमिल, कन्नाड़ा और तेलुगु के अलावा स्थानीय आदिवासी भाषा में निपुण थे। भारतीय क्रांति, एक महान क्रांतिकारी नेता गवां चुकी है। आंतरिक स्तर पर उन्होंने सैद्धांतिक और वैचारिक संघर्ष तीव्रता से किया। वे संघर्ष से ही फौलादी बन गये। बहुत ही कम कार्यकर्ताओं के साथ, अपेक्षाकृत काफी कम

अनुभव होने पर भी बहुत ही धैर्य और दृढ़ आत्मविश्वास के साथ आंदोलन को नेतृत्व दिये। सभी के साथ घुलमिलकर कैडरों और जनता में भी एक जनवादी वातावरण विकसित कर उनका विश्वास जीता। इसीलिए सभी के दिलों में वे हमेशा रहेंगे।

जिस दिन से वे पार्टी से जुड़े तब से लेकर उनकी आखिरी सांस तक कम्युनिस्ट मूल्यों से लैस एक अच्छे मजदूर वर्गीय बुद्धिजीवि रहे थे। ऐसे नेतृत्व को खोना, सिर्फ ट्राइ-जंक्शन का नहीं बल्कि समूचे भारत के आंदोलन का नुकसान है। किसी भी क्रांति के लिए नेतृत्व की निरंतरता बनाये रखना जरूरी है।

देश के क्रांतिकारी आंदोलन को नये अनुभव देने की क्षमता पश्चिम घाटी के आंदोलन में है। इसीलिए केंद्र और राज्य सरकारों ने षड़यंत्र रचा, कामरेड देवराज समेत एक और वरिष्ठ पार्टी सदस्या कामरेड अजिता को पकड़ा और एक फर्जी मुठभेड़ में मार दिया। ट्राइ-जंक्शन में अपनी पकड़ मजबूत कर ही रहा था के इस फर्जी मुठभेड़ ने पार्टी को बहुत बड़ा झटका दिया है। 50 साल पहले इन्ही जंगलों में कामरेड वर्घिस् की शहादत आज भी जनता भूल नहीं पायी है। जनता आज भी उन्हीं आदर्शों पर आधारित आंदोलन को जारी रखना चाहती है। इसलिए ही पार्टी ने संपर्क करते ही जनता ने इसे तहेदिल से स्वागत किया। अब वे कामरेड देवराज को कभी नहीं भूल पायेंगे।

कामरेड देवराज की क्रांतिकारी जोश को, कोई दमन, अवसरवाद विघटनवाद अथवा कोई नकामयाबी या पीछेहट कमजोर न कर पाई, आखिर तक उन्होंने पार्टी की दिशा पर कायम रहे। जिंदगी में कोई रणनीतिक सुलह-समझौता नहीं किया। अवसरवाद और संशोधनवाद के खिलाफ अति दृढ़ता से संघर्ष किया। इसके साथ-साथ क्रांतिकारी शक्तियों को और पार्टियों को जोड़ने में कतई झीझक नहीं दिखायी। क्रांतिकारी आंदोलन की जिम्मेदारी लेने में कभी पीछे नहीं हटे। वे कठिन परिश्रम और निष्ठा के प्रतीक बन गये हैं। आज ये महान क्रांतिकारी हमारे बीच नहीं रहा। देश के मजदूर वर्ग ने अपना नेता खोया है। वे भले ही हमारे साथ नहीं है, मगर उन्होंने दिये प्रेरणादायी भाषण और उनके गाये क्रांतिकारी गीत आज भी पश्चिम घाटी के जंगलों में गूंजते रहे हैं। उन्होंने लिये राजनीतिक और सैनिकी क्लास आज भी उसके विद्यार्थियों के कानों में बज रहे हैं। वे एक निस्वार्थ व्यक्ति थे। कमेटी ने जो भी जिम्मेदारी उन पर सौंपी, उन्होंने

स्वीकर कर ली। सिर्फ पश्चिम घाटी में ही नहीं बल्कि आंध्र, तेलंगाना और दंडकारण्य, बिहार, झारखण्ड में भी कामरेड देवराज को याद रखेंगे। उसके आदर्श हमेशा जीवित रहेंगे। उनकी समर्पण, परिश्रम और त्याग भावना पार्टी को निश्चित रूप से आगे ले जायेगी। वर्तमान के नुकसान को पार करते हुए अपने लक्ष्य तक ले जाने में भविष्य के कैडरों को लाभदायी रहेगा। प्रवाह के विपरीत तैरने की शिक्षा उनसे लेंगे। काम की शैली, दृढ़ता, प्रतिबद्धता और धीरज के प्रतीक कामरेड देवराज पार्टी में आदर्श के रूप में रहेंगे। उनके दिखाये रास्ते एक सच्चे कम्युनिस्ट बनने का तरीका है। उस रास्ता में आगे बढ़ना ही इस महान शहीद के लिए असली श्रद्धांजलि रहेगी। कामरेड्स के मदद से उन्होंने पश्चिम घाटी में क्रांति का परचम फहराया और भले ही कितना भी दमन बढ़े ये आंदोलन, तमाम शोषक-शासक वर्गों का सफाया कर प्रगति करेगी। पक्षिण पष्ठिचम मानसून का गड़गड़ाहट की तरह क्रांतिकारी आन्दोलन की झंझावत आगे बढ़ेगी। जनता की सत्ता को प्रस्थापित कर नवजनवादी राज्य की स्थापना करेगी और पहले समाजवादी फिर साम्यवाद की ओर आगे कूच करेगी।

कामरेड़ योगेश को लाल-लाल जोहार।
अमर शहीदों का आशय को पूरा करने के लिए जनआंदोलन, जनयुद्ध को तेज करेंगे।

क्रांतिकारी अभिवाादन साथ
केन्दीय कमेटी
जनवरी-2020 भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)